IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, January 2022
Impact Factor: 6.252

भारतीय संस्कृति में सहिष्णुता की अवधारणा और भूमिका

Moti Lal Marskole[1] and Dr. Lopamudra Sadashivrao Bansode[2]
Research Scholar[1] and Guide[2]
Sardar Patel University, Balaghat, M.P., India
montimarskole80@gmail.com[1]

परिचय

भारतीय संस्कृति, एक सतत प्रक्रिया होने के नाते, अपने लंबे इतिहास में किसी विशेष चरण के उद्देश्यपूर्ण गहन अध्ययन या विश्लेषण हम स्वयं को सीमित कर सकते हैं । इस पेपर का उद्देश्य आपने आप को भारत संस्कृति के प्राचीन और मध्यकाल तक ही भारतीय संस्कृति को सीमित रखते हैं। मध्ययुगीन काल में भारतीय संस्कृति को उसके प्रादेशिक तने तक सीमित नहीं किया जा सकता है, चाहे आर्य-पूर्व हो या आर्य भारत में इस्लाम के सांस्कृतिक हटाकर । दरअसल, उपमहाद्वीप के मुसलमानों का सांस्कृतिक इतिहास भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। इसी तर्क से पूर्व-इस्लामिक भारतीय संस्कृति भारत के मुसलमानों की उतनी ही विरासत है जितनी हिंदुओं या अन्य की। आदर्श रूप से कहा जाए तो, न तो भारतीय मूल के सांस्कृतिक तत्व मुस्लिम उपस्थिति से पहले, और न ही इस्लामी मूल के सांस्कृतिक तत्व, जो भारतीय वातावरण में विकसित और फल-फूल रहे थे, साथ ही अत्यधिक जटिल और अभी भी बढ़ती इकाई या प्रक्रिया के विदेशी या अपरिहार्य तत्वों के रूप में भारतीय संस्कृति देखा जा सकता है।